वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर – 2017

* अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिनचर्या – 4
* देव धर्म का निराला पक्ष
* नीच अनुराग आत्मा के लिए पतनकारी होते हैं
* 72 साल के सतबीर की अद्भुत सेवा
* मेल – मिलाप का आधार चारों जगतों की सेवा
* धन्यवाद ज़रूर दें...
* सवाल संतों की शुचिता का
* छोटी छोटी क्रियांए किसी को मुस्कान दे सकती है

अद्वितीय सत्गुरू की अद्वितीय दिनचर्या – 4

देवात्मा के भीतर श्रद्धा का भाव मनुष्यों को चकाचौंध करने वाला था। एक बार भगवान देवात्मा एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रस्थान कर रहे थे, रास्ते में कुछ विश्राम के लिए रुके। वहां निकट एक मन्दिर था, सत्गुरू ने उसे देखने की इच्छा ज़ाहिर की। किसी सेवक ने सुझाया कि उनकी चप्पलें लाई जाएं, परन्तु भगवान देवात्मा ने चप्पलें पहनने से इन्कार कर दिया। उन्होंने फरमाया कि "यह एक पवित्र स्थान माना जाता है, इसमें हम नंगे पांव जाएंगे।" बेशक वह स्थान ऊबड़ खाबड़ था, मन्दिर का भी कोई रख रखाव नहीं था, परन्तु भगवान दूसरों के श्रद्धा के स्थान को भी पूरा सन्मान देते थे।

भगवान उस हर व्यक्ति के आगे झुक जाते थे, जो अपनी आत्मा का विकास करना चाहता था। कितने अवसरों पर अपनी श्रद्धेय वा पूजनीय माता के दर्शन मात्र उनके श्रद्धा का भाव इस कदर उमड़ पडता था कि वह धूल मिट्टी से भरी ज़मीन पर एक दम अपनी नम्रता से और श्रद्धा से माता के चरणों में साष्टांग लेटकर उनके चरण छूते। उन्हें उस समय माता के बिना कुछ दिखाई नहीं देता था। किस कदर सुन्दरत्तम भाव!

स्वपन में भी यदि मां आती तो वह वैसी ही श्रद्धा का प्रकाश करते, जैसा वह जागने की सूरत में करते थे। एक बार भगवान ने फरमाया कि स्वपन में उन्होंने एक सच्चे साधू को देखा, जिनका वह बहुत सम्मान करते थे। श्रद्धा के भाव ने उन्हें हरकत में ला दिया और स्वपन में भी उनके पांव छूकर प्रणाम किया। परन्तु उन्हें एक दम सूझा कि उन्होंने उनके चरण स्पर्श करने से पहले हाथ धोए हैं कि नहीं। भगवान की श्रद्धा का यह आलम था कि स्वपन में भी अपने श्रद्धेय के चरण स्पर्ष करने से पहले हाथ धोने का ख़्याल आया।

<u>भगवान देवात्मा का गहरी मानवता से परिपूर्ण हृदय</u>

भगवान की देवात्मा के रूप में गहरी मानवता के प्रति हमदर्दी से परिपूर्ण थी। उन्होंने ऐसा जीवन ब्रत ग्रहण किया, जिससे गाने का आख़िरी लाईन थी "जग के उपकार में ही जीवन यह जावे।" यही गहरी भावना उनके लेखों में भी कूट कूट कर भरी हुई है। कनल जी फरमाते हैं कि एक घटना याद है, जिसका गहरा प्रभाव मेरे हृदय पर पड़ा। जब विश्व युद्ध शुरू हुआ, भगवान का 64वां जन्मदिन का अवसर था, उस समय इस युद्ध के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पेश किया और पास किया गया, भगवान देवात्मा ने अपने गहरे दुख के भावों को इस प्रकार प्रगट किया: -

"ओह! देवात्मा के लिए यह दृश्य किस क़दर असहनीय है, बच्चों का नरसंहार हो रहा है। बच्चों, स्त्रियों, साहित्य, धार्मिक इमारतों और अन्य कई प्रकार की हानि हो रही है।" भगवान के जो दुख भरे शब्द थे, उनको मनुष्य के लिए समझना और वर्णन करना कठिन है। उनके दुख की गहराई को मापा नहीं जा सकता। 600 आदमियों की हाज़री में (दिसम्बर 1915) इस युद्ध के जल्दी ख़त्म होने के लिए अपनी शुभ कामनाएं भेजी गई। बताया गया कि भगवान देवात्मा इस युद्ध की समाप्ति के लिए प्रतिदिन मंगल कामना करते थे।

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 10
सितम्बर – 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देव धर्म का निराला पक्ष

देव धर्म एक नवीन और विज्ञान मूलक धर्म है। इस संसार से बिल्कुल भिन्न है। इसके पू० संस्थापक, इसकी शिक्षा, इसके धर्म साधन, इसका लक्ष्य सब भिन्न हैं और पूर्ण अद्वितिय है।

संसार के अधिकतर धर्म ईश्वर, अल्ला, वाहिगुरू को लेकर या उसके अवतारों और विशेष प्रतिनिधियों को, देवी देवताओं को लेकर स्थापित हैं। उनका यह विश्वास एक है कि वाहेगुरू वा ईश्वर सर्व-व्यापक है, सर्व ज्ञानी है, सर्व शक्तिशाली है, वह सब का बनाने वाला, पैदा करने वाला वा चलाने वाला है। उसके हाथ में सब कुछ है, वही सब कुछ करन करावन हार है। मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं, उसका हुक्म प्रधान है, उसके हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता।

यह साधारणत: सब मनुष्यों का विश्वास है कि मनुष्य का सारा जीवन, जन्म से मृत्यु तक ईश्वर पर निर्भर करता है। उसी की इच्छा से वह यश, मान प्राप्त करता है या अपमानित होता है, दूध, पुत्र पाता है उससे वंचित रहता है। पद प्रभुत्व पाता है या साधारण ही रहता है। वही ईश्वर सब का दाता है। "जगत भिखारी फिरत है, सब का दाता राम।"

ऐसा विश्वास रखकर संसारिक धर्मों के अन्दर ईश्वर या खुदा या देव देवताओं की स्तुति, अराधना और महिमा के गाने का महत्व है। उक्त सब धर्मों के अन्दर जापों, पाठों का, कीर्तनों, जगरातों, भेंटों का, जय ध्वनि वा जयकारों का विशेष स्थान है। यही साधन को धर्म समझे जाते हैं, यही भक्ति समझी जाती है। यही पूजा वा धर्म के साधन समझे जाते हैं। ईश्वर या देवी देवताओं की निकटता, या कल्पनात्मिक प्रसन्नता प्राप्ति ही लक्ष्य माना जाता है। इस लक्ष्य की पूर्ति से मानव जन्म की सच्ची सफलता समझी जाती है।

देव धर्म की स्थिति इससे पूर्णत: भिन्न है। देव धर्म किसी ईश्वर अल्ला या वाहिगुरू में तनिक भी विश्वास नहीं रखता। देव धर्म में क्या ईश्वर क्या देवी देवताओं का कोई स्थान नहीं। ईश्वरी धर्मों से देव धर्म के सब सिद्धान्त विपरीत हैं। ईश्वरी धर्म मानते हैं कि ईश्वर ही सत्य है, संसार मिथ्या है। देव धर्म का मुख्य सिद्धांत है कि विश्व, नेचर या ब्राह्मण्ड ही केवल सत्य है। ईश्वर पूर्णत: मिथ्या है। उसका कोई अस्तित्व नहीं। वह किसी का कर्ता नहीं, यह विश्वास भ्रान्ति है, वहम है। मनुष्य की कल्पना है। मनुष्य जीवन में उसका कोई दख़ल नहीं। देव धर्म मानता है कि केवल नेचर सत्य है, वह सदा से है और सदा रहती

है। नेचर में उसके नियम काम करते हैं। मनुष्य की उत्पति, उसकी सेहत, उसके रोग, उसके दुख, सुख, उसका यश, अपयश, उसका अमीर गरीब होना, सब नेचर के नियमों पर निर्भर है। उसका जीवन मृत्यु सब नेचर के नियमों के अनुसार होता है। जो नियम जीवन में मनुष्य पूरे करता है, उसके ही परिणाम भुगतता है।

इसलिए नेचर के नियमों के ज्ञान का देव धर्म में बहुत महत्व है। उनका बहुत सम्मान है। किसी ईश्वरी जाप के लिए देव धर्म में कोई स्थान नहीं। उसको पूर्ण निरर्थक वा फजूल वस्तु माना जाता है। मुर्खों और अबोधियों का पागलपन समझा जाता है।

देव धर्म मनुष्य प्रकृति का मुख्य नियम रोशन करता है और उसके प्रचार और प्रसार पर सारा जोर लगाया जाता है। देव धर्म बताता है कि मनुष्य प्रकृति सुख परायण है। सुख की अनुरागी और दुख के प्रति घृणा रखती है। मनुष्य के सुख अनुराग ही मनुष्य के जीवन योजना के सृजनकर्ता हैं। उसको दुखी रोगी, गरीब और हानिग्रस्त बनाते हैं। सुखों की चाट और लालसा के कारण हर स्थान में मनुष्य अध्यात्मिक रोगी है। उन रोगों के कारण अन्धकार ग्रस्त, मिथ्या ग्रस्त, पाप ग्रस्त वा मोह ग्रस्त है। हानि और दुख को प्राप्त हो रहा है।

देव धर्म का सारा ज़ोर अधिकारी मनुष्यों को मनुष्य के रोगों या अदना सुखों के दिखाने और मनुष्य को उन अदना सुखों के भयानक बन्धनों से मुक्त करने में है।

ईश्वरी धर्म मनुष्य आत्मा को ईश्वर का अंश या स्वरूप मानते और इसीलिए उसको निर्लेप वा पवित्र मानते हैं।

देव धर्म मनुष्य आत्मा को सुख परायण और पाप परायण मानता है। उसको पाप ग्रस्त वा मिथ्या ग्रस्त मानता है। सुख अनुराग उसी प्रकार मनुष्य के आत्मा के रोग हैं, जैसे शरीर के अपने रोग हैं। नशा अनुराग आत्मा का रोग है, काम अनुराग, धन का अनुचित बन्धन, मान, बढ़ाई, प्रशंसा, ईर्षा द्वेष यह सब आत्मा के रोग हैं। इन नीच सुख अनुरागों अर्थात आत्मिक रोगों के कारण मनुष्य बेमुख हुआ फिरता है। देव धर्म बताता है कि जो सुख मनुष्य खुशी - 2 लेता है, जिन्हें लेने के लिए वह सर घड़ की बाज़ी लगाए हुए है, वह उसके जान लेवा हैं, नाश करने वाले हैं। देव धर्म मनुष्य की इस उल्टी दृष्टि को दिखाता है।

इन नीच सुखों के अदना बन्धनों को दिखाना, उनके प्रति जागृत करना, सच्ची होश देना देव धर्म का मुख्य काम है।

दूसरे धर्मों ने या धर्म संस्थापकों ने, या पीरों पैगम्बरों ने या गुरुओं, अवतारों ने मनुष्य के सही स्वरूप को न समझ कर उसको ब्रह्म स्वरूप, जोत स्वरूप, अशरफ - फुल मखलुकात, देवत्व का शोला बताया है। उन्होने मनुष्य प्रकृति को रोगी नहीं देखा और न ही बताया है। उल्टा उन्होंने मनुष्य की इच्छाएं पूर्ण करने का दावा किया है। या जाप, सिमरन के ढंग बताए हैं। परन्तु मनुष्य के रोग बढ़ते गए। धर्म बढ़ गए, धर्म स्थान बढ़ गए, पूजा पाठ बढ़ गए, परन्तु मनुष्य का जीवन दुखों और मुसीबतों का घर बन गया। पूजा, पाठों की भरमार किसी काम नहीं आई। जब मर्ज़ की दवा ही उल्टी की जाए तो रोग कैसे जा सकता है?

देवात्मा के भीतर अजब रोशनी आई है। उन्होंने अपनी इस अद्वितिय रोशनी में मनुष्य की प्रकृति को जाना है। उन्होंने यह देखा कि मनुष्य सुख परायण होकर दुखों का घर बन रहा है, वह रोग ग्रस्त है, वह दुख और विनाश को प्राप्त हो रहा है।

उन्होंने इस सचाई को भी रोशन किया कि

मनुष्य अपने हृदय वा आत्मा के भीतर के सुख अनुरागों वा रोगों को नहीं देख सकता। उन रोगों का भयानक परिणाम अपने आप नहीं देख सकता। न मनुष्य अपने आप उन रोगों से मुक्त हो सकता है और न ही वह अपने आप उच्च भावों को पैदा करके उच्च हो सकता है।

देवात्मा की रोशनी की मनुष्य को अवश्यकता है। वह अपने आप उच्च भाव पैदा करके उच्च भी नहीं बन सकता।

देवात्मा की रोशनी में ही वह अपने रोगों और उनके भयानक रूप को देख सकता है, अपने रोगों से जागृित हो सकता है। विवेक पा सकता है। उनके प्रति फिकरमन्द हो सकता है।

देव धर्म अधिकारी आत्मिक रोगियों को बेसुधि और बेसोझी से देवात्मा की रोशनी से जगाने का लासानी काम करता है। इसमें रोगों का फिकर पैदा किया जाता है। देवात्मा की शक्ति पहुंचा कर अधिकारी मनुष्यों को उन रोगों से मुक्त होने के साधनों में लगाया जाता है। यह निराला कारज देव धर्म कर रहा है।

जबकि बाम मार्गी धर्म आत्मिक रोगों को ही धर्म समझ कर अपना नाश करने पर जोर दे रहे हैं। वह पांच 'म' को मानते है। उनकी महानता बताते हैं। वह हैं मांस, मदिरा, मैथुन, माजून और मछली आदि। कैसा अन्धेरा! कैसी उल्टी दृष्टि!!

कुछ धर्मों में नैतिकता का पक्ष सराहनीय है एक-एक बुराई का विरोध भी है, परन्तु नाम और जाप का बहुत बड़ा महत्व समझा जाता है। मनुष्य के आत्मा के रोगों को नहीं देखा, आत्मा को निर्लेप स्वीकार कर लिया।

देव धर्म का मुख्य कारज ही देवात्मा की रोशनी के द्वारा आत्मा को दिखाना, आत्मा के रोगों को दिखाना, आत्मा के पतन वा नाश को दिखाना, आत्मा की कुशल वा सेहत को दिखाना हैं। मनुष्य को उसके रोगों से निकलने का फिकर पैदा करके, उनसे मुक्त होने के प्रयास में लगाते हैं।

देव धर्म मनुष्य जीवन के भीतर आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन पैदा करता है। जबकि ईश्वरी धर्म जाप पर ज़ोर लगाते हैं।

देव धर्म वास्तव में मनुष्य जीवन को सुधारता है। वह सम्बन्धों में मेल पैदा करता है। स्वार्थ के नाश पर ज़ोर देता है। पर हित में लगाता है।

आत्मिक होश, आत्मिक रोगों का ज्ञान, रोगों का फिकर पैदा करता है। उनसे मुक्त होने के लिए और आत्मिक सेहत को प्राप्त करने के लिए संग्राम में डालता है। यही उसका मुख्य उद्देश्य है जो संसारिक धर्मों से पूर्णता भिन्न है।

बलदेव सिंह

शोक समाचार

बहुत ही शोक और दुख का विषय है कि पुराने, बहुत समझदार साथी सेवक श्रीमान कुलदीप सिंह जी कल्याण मलका बहुत थोड़ी बिमारी के बाद 26-27 जून 2017 को हस्पताल में ही दम तोड़ गए। वह प्राय: 73 वर्ष के थे। हम परिवार के धैर्य्य और देह त्यागी की आत्मिक शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

नीच अनुराग आत्मा के लिए पतनकारी होते हैं

(भगवान का एक उपदेश)

जीवन तत्व शिक्षक भगवान् ने बाहर से आए हुए सेवकों का ज़िकर करके फरमाया:- कि उनकी वापसी से पहले मैं यह आवश्यकता बोध करता हूँ कि आत्मिक जीवन के मुख्य तत्वों के बारे में तुम को फिर याद दिलाऊँ, और वह यह कि किसी आत्मा में जितने नीच अनुराग मौजूद होते या जितनी नीच घृणाऐं मौजूद होती हैं, वे सब के सब उसके लिए पतनकारी अर्थात् उसे बिगाड़ने या उसका नाश करने वाले होते हैं। उनके विपरीत यदि उस में किसी प्रकार के उच्च अनुराग और उच्च घृणाओं की उत्पत्ति और उन्नति हो, तो वे उसके बनाने वाले अर्थात् उसकी निर्माणकारी शक्ति को बढ़ाने, व विकास करने वाले होते हैं। आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सारी आयु की खोज के बाद, मैंने इन मुख्य तत्वों को थोड़े से थोड़े शब्दों और साधारण से साधारण रूप में प्रकट करने की कोशिश की है। नेचर में प्रत्येक गठन प्राप्त अस्तित्व के लिए सच्ची और यथार्थ सज़ा यही है कि यदि उसका परिवर्तन पतन या बिगड़ने की ओर हो तो उसके विविध अंग बिगड़ना शुरु करते हैं, और बिगड़ते-बिगड़ते अन्त में उसकी उस गठन या साख़्त का ही नाश कर देते हैं। पतन की अवस्था में पड़कर प्रत्येक मनुष्य क्या अपने गठन प्राप्त शरीर और क्या गठन प्राप्त आत्मा दोनों के ही सम्बन्ध में ऐसे बुरे फलों का भागी बनता है, उदाहरणार्थ- यदि किसी जन की शारीरिक आंखों के बिगड़ने से उसकी नज़र में कमी न आई हो, और वह सदैव अच्छी तरह देख सकता हो, उसके कानों के बिगड़ने से उसके सुनने में कुछ कमी न आती हो, और वह सदैव ही अच्छी तरह सुन सकता हो, उसके फेफड़ों के बिगड़ने से उसके श्वास लेने में कुछ कमी न आई हो, और वह हमेशा ही अच्छी तरह दम ले सकता हो, इसी तरह उसके दान्त, उसका पेट, उसकी टांगें और उसके हाथ आदि सब अंग बिगड़ कर भी अपना-अपना काम हमेशा ठीक तौर पर करते रहते हों, तो किसी को भी अपने शरीर के सम्बन्ध में कोई शिकायत नहीं हो सकती, और कोई भी होशमन्द आदमी यह शिकायत नहीं करता, और नहीं कर सकता कि हाय! मेरी आँखें क्यों ठीक काम देती हैं, मेरे दान्त क्यों साबुत और अच्छे हैं, काश! कि मेरी आँखें ख़राब हो जाएं और मेरे दांत टूट जाएं आदि। लेकिन फिर भी यह सच है कि लोगों की आँखें की रोशनी कम हो जाती है, उनके कान बहरे हो जाते हैं, उनके दान्त गिर जाते हैं, उनकी जवानी की ताकत चली जाती है, उनके बाल सफेद हो जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि नेचर का अटल नियम यही है कि जिसके विपरीत निर्णय देने की किसी कहलाने वाले ईश्वर, या परमेश्वर या देवी या देवता आदि में कोई और किसी प्रकार की कुछ भी शक्ति नहीं हैं।

अब जिस प्रकार यह सच है कि शरीर के अन्दर हर क्षण परिवर्तन जारी है और वह बेहतरी की ओर परिवर्तित होने पर बनता और बदतरी की ओर परिवर्तित होने पर बिगड़ता है, उसी तरह गठन प्राप्त आत्मा भी उच्च परिवर्तन की अवस्था में उच्च और नीच परिवर्तन की अवस्था में नीच बनता है। अब यदि शरीर की तरह आत्मा की गठन और उसके बिगड़ने और बनने के तत्वों को हम बख़ूबी देख और उपलब्ध कर सकें, तो हम तभी अपना भला चाहने वाले हो सकते हैं, जब हम अपने आत्मा की बिगाड़ने वाली गतियों को पहचानने और उनसे अपना उद्धार चाहने के योग्य बनें और इस में जिन उच्च अनुरागों के द्वारा

उच्च गतियां पैदा होती हैं, उनके किसी तरह से इच्छुक हो सकें। यह सत्य याद रखना चाहिए कि यद्यपि मनुष्य में उसकी पैदाइश के दिन से ही सुख के लिए अनुराग पैदा हो जाता है, फिर भी वह अपने आत्मा की सच्ची गठन और उसके शुभ के सम्बन्ध में न केवल अन्धकार और अज्ञान की हालत में होता है, बल्कि अपनी उस आत्मिक अन्धता के कारण अपने उस शरीर के सम्बन्ध में भी, कि जिसे वह अपनी आंखों से भी देखता है, उसके शुभ की ओर से कितनी ही सूरतों में अज्ञानी या अबोधी रहता है। इस से भी बढ़ कर एक-एक जन यह जानकर भी कि अमुक-अमुक सुख की तृप्ति चाहने से उसके शरीर को इस या उस प्रकार की हानि पहुंचती है, फिर भी वह सुख की गुलामी के कारण उस हानि को ग्रहण करने के लिए अपने आप को लाचार महसूस करता है और अपने अन्दर यह ख़्वाहिश महसूस करता है कि चाहे कैसी ही हानि क्यों न हो सुख अवश्य प्राप्त करना है। वह ऐसी दशा में अपने शुभ से विमुख होकर सुख की ओर भागता है और अपना पतन आप चाहता है। मानों ऐसी हालत में वह अपने अस्तित्व का आप शत्रु बनता है और अपना खून आप करता है। क्या यह सच नहीं कि जो लोग शराब, भंग, अफ़ीम, तम्बाकू, चरस, चण्डू और कोकीन आदि नाना नशों के दास हैं, जो अय्याश और बदचलन हैं या जो पति और पत्नि नेक चलन होकर भी अपने ही सम्बन्ध में सख़्त ज़्यादतियां करते हैं, या जो लोग खाने पीने में असंयम करते हैं, ऐसे सब लोग अपने शरीर की धीरे-धीरे आत्महत्या करते हैं। फिर एक-एक पुरुष या स्त्री ग़म या क्रोध आदि के क्षणिक पागलपन में कुएं में छलांग मार कर या जहर खाकर या अपने कपड़ों को आग लगाकर या स्वयं गोली मार कर या एक या दूसरे किसी और ढंग से एक दम ही आत्म हत्या कर लेते हैं। जैसे शरीर के सम्बन्ध में धीरे-धीरे या अकस्मात आत्म हत्या जारी है, वैसे ही आत्मा की खुदकुशी भी जारी है और लाखों स्त्री पुरूष अपने नाना नीच अनुरागों और अपनी नाना नीच घृणाओं के दास होकर अपने-अपने आत्माओं की खुदकशियां कर रहे हैं।

अब तुम अपने-अपने जीवनों की ओर निगाह ले जाकर देखो कि तुम्हारी क्या अवस्था है? क्या तुम्हारा निज का साधन कोई सच्चा साधन होता है कि जिसमें तुम्हें आत्म प्रकाशक ज्योति मिलती है और उसमें तुम्हें अपनी आत्मिक अवस्था कुछ नज़र आती है? कितनों की तो ऐसी कृपा-पात्र अवस्था है कि उनका किसी ऐसे साधन के लिए जी ही नहीं चाहता। उनमें अहं अनुराग इस हद तक बढ़ा हुआ है कि वे घटिया होकर भी स्वयं को घटिया देखना और अनुभव करना किसी तरह पसन्द ही नहीं करते और न ही किसी के सामने अपने आप को ऐसा प्रकट करना चाहते हैं, इसलिए वे इस ज्योति के चाहने और पाने के ही अयोग्य होते हैं, कि जो उनकी आत्मिक अवस्था को सत्य रूप में दिखाती और दिखा सकती है। फिर तुम में से जो जन अपने निज के साधन भी करते हों, उन्हें यह पड़ताल करने की आवश्यकता है कि क्या उन्हें कुछ आत्म प्रकाशक ज्योति मिली और उसके द्वारा उन्हें कुछ अपनी नीचता दिखाई दी और उसके लिए उनके अन्दर कुछ घृणा पैदा हुई? उनके अन्दर कुछ उच्च भाव उत्पादक किसी तेज शक्ति का अमल हुआ और उनके अन्दर किसी उच्च कार्य के लिए कुछ आकांक्षा जागी, और उसके लिए हरकत में आने के लिए उन्हें कुछ शक्ति मिली? यदि ऐसा कुछ नहीं, हुआ, तब ऐसा साधन किसी काम का नहीं। वह उसी तरह है जैसे किसी ने नमाज़ पढ़ ली, किसी ने संध्या

कर ली या किसी ने जपजी या सुखमनी साहिब का पाठ कर लिया, या किसी ने कुछ जाप कर लिया, या किसी ने झूठे शब्दों में किसी झूठे देवता की पूजा या उससे कोई प्रार्थना कर ली। ऐसे किसी मिथ्या साधन से आत्मा का कुछ भला नहीं होता। हां कई सूरतों में उसका पतन अवश्य होता है।

तब आवश्यकता इस बात की है, कि हमारे आदमियों को वह रोशनी मिले और उन्हें उसमें यह सत्य दिखाई दे कि सचमुच नीच अनुराग मेरे आत्मा के लिए पतनकारी हैं, और वह अपने भीतर यह प्रश्न करें कि यदि मैं अपनी सन्तान का अनुरागी हूँ, यदि मैं धन का अनुरागी हूँ, यदि मैं नाम और इज्जत का अनुरागी हूँ या अपने किसी शारीरिक आराम या किसी और सुख का अनुरागी हूँ तो इसका क्या परिणाम होगा? याद रखो कि नेचर के नियम अटल हैं। यदि हम आग में हाथ डालें और यह चाहें कि वह न जले तो क्या वह हमारे चाहने से नहीं जलेगा? या हम संखिया खा लें, और चाहें कि इसका हमारे शरीर पर कोई दुष्प्रभाव न हो तो क्या उसका कोई दुष्प्रभाव न होगा? ऐसा नहीं है। हम नेचर में चारों ओर से उसके अटल नियमों से घिरे हुए हैं और होशमन्द होकर अपनी आखें बन्द करके नहीं चल सकते, परन्तु हमारी रक्षा और हमारा भला इसमें है कि हम इन नियमों को देखने और जानने और उनके पूरा करने के योग्य बनें।

फिर यह भी याद रखो कि जितनी प्रकार के नीच अनुराग हैं वह आदमी के भीतर परहित उत्पादक किसी उच्च राग या उच्च या शुभ भाव की उत्पत्ति की योग्यता को धीरे-धीरे घटाते या कम करते जाते हैं, बशर्ते कि उसमें ऐसी कुछ जन्मजात योग्यता आई भी हो और अन्त में उसे धीरे-धीरे नष्ट कर देते हैं। ये नीच अनुराग एक-एक जन पर अधिकार करके उसके शरीर और दिमाग़ दोनों को इस हद तक अपने काबू में कर लेते हैं कि वह फिर उनकी तृप्ति के अतिरिक्त किसी हित उत्पादक सच्ची सेवा करने की कोई इच्छा ही अपने अन्दर अनुभव नहीं करता, और नहीं कर सकता और वह स्वभावत: उच्च संगत और परोपकार विषयक कामो में परे-परे रहना चाहता है। तब यदि हम अपने शरीर और मस्तिष्क को ऐसे किसी अनुराग के ही हवाले करे दें कि जिससे हम अपने अन्दर किसी भले काम को केवल भले काम की नीयत से करने के योग्य न रहें या न हो सकें, तो यह हमारे लिए कैसा भयानक दृश्य और हमारे नीच अनुरागों का कैसा पतनकारी और महाभयानक परिणाम है। ऐसे नीच अनुरागी जनों में से यदि कोई जन मुलाज़िम हो, और वह पेन्शन भी ले चुका हो तो भी वह किसी उच्च भाव के न रखने पर किसी भले काम को वासना रहित होकर अपने हाथ में नहीं ले सकता। यदि उसे कहो कि अब तुम्हें कमाने खाने का तो कोई फ़िकर नहीं रहा, खाली समय को यूँ ही गप्पों में नष्ट करने की बजाय तुम कुछ देर तक किसी स्कूल में पढ़ा दिया करो या अमुक अनाथालय में काम किया करो या बिमारों की शुश्रुषा किया करो, या प्यासों को पानी ही पिलाया करो या देव समाज के दफ्तर में ही काम किया करो, तो उसके लिए कोई ऐसा भला काम करना कि जिसके बदले में उसे धन न मिलता हो या कोई विशेष इज्ज़त न मिलती हो, असम्भव हो जाता है। जो लोग दफ्तरों आदि में कर्मचारी हैं, वे यह मजबूरी पेश किया करते हैं, कि कोई भला काम किस समय करें, फुर्सत ही नहीं मिलती। सारा दिन दफ्तर में काम करना पड़ता है, फिर सुबह-शाम आराम या आवश्यकताओं का प्रबन्ध करना होता है। परोपकार का कोई काम किस समय करें? ऐसे जनों को यदि कहा जाए कि तुम्हें हर इतवार को तो

छुट्टी होती है और उस दिन तुम्हें अपनी नौकरी की तन्ख़्वाह भी मिल जाती है, तुम उसी दिन कुछ भला काम किया करो, तो भी वे अपने एक या दूसरे नीच अनुराग के कारण ऐसा करने के लिए तैयार नही होते। इसलिए फुर्सत के समय को भी अपने ही एक या दूसरे अनुराग की तृप्ति में लगा देते हैं।

फिर जिस जन का सारा जीवन एक नहीं, अनेक नीच अनुरागों की गुलामी में व्यतीत हुआ हो और उनके द्वारा उसने अपना बहुत बड़ा पतन कर लिया हो, वह मरने के बाद केवल यही नहीं कि अधम या उसके ऊपर के किसी नीच लोक में जाकर उसके भयानक परिणाम भुगतता है, बल्कि वह फिर साधारण अवस्थाओं में इस योग्य ही नहीं रहता कि उसे परोपकार विषयक किसी सच्चे और हितकर काम के करने के लिए जिस सच्चे उच्च भाव या उच्च अनुराग की ज़रुरत है, उसे किसी ढंग से भी अपने भीतर पैदा कर सके, इसलिए ऐसी बुरी अवस्था में उसका अपने पतन को दिनों दिन अधिक से अधिक बढ़ाते जाना और अन्त में सड़ गल कर और घुल - घुल कर समाप्त हो जाना आवश्यक हो जाता है।

इसी क्रम में जीवन दाता भगवान ने धन के अनुराग की मिसाल देकर बतलाया कि किस तरह धन का अनुरागी मनुष्य अपने आत्मा का पतन करता है, यहां तक यदि वह दयानतदारी से भी धन कमाता हो, तब भी वह अपने इस नीच अनुराग के कारण नहीं चाहता कि उसका धन ज़्यादा से ज़्यादा किसी परोपकार विषयक काम में खर्च हो और अगर कभी किसी इज्ज़त आदि के भाव से परिचालित होकर वह किसी प्रकार के दिखावटी दान का वादा भी कर लेता है तो फिर उसके कुछ समय बाद अपने धन अनुराग के अधिकार में आने पर वह कई हालतों में या तो उसे बिल्कुल देना ही नहीं चाहता या यदि किसी कारणवश ऐसा न कर सकता हो तो एक या दूसरे उपाय से उसमें से कुछ न कुछ निकाल लेने की कोशिय करता है। फिर जब यहां सारी आयु उसके नीच अनुराग में डूबा रह कर वह अपने प्यारे धन को यहीं छोड़ जाता है और उसके बाद उस पर उसका अपना कोई अधिकार नहीं रखता और न ही अधम लोक में इस नीच अनुराग की किसी तरह तृप्ति पा सकता है, तब वह उसकी तृप्ति न पाने से अति भयानक दुःख में से गुज़रता है। यही कृपा पात्र अवस्था प्रत्येक नीच अनुराग से पैदा होती है। इसका मतलब यह नहीं कि कोई मनुष्य धन न कमाए या कोई मनुष्य पद प्राप्त न करे या नाम और इज्ज़त न पाए या बीवी और बच्चे न रखे, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि वह उन में से किसी का अनुरागी न रहे और उनमें से कोई चीज़ उसके आत्मा के हित के पथ में रोक न बने, बल्कि वह शुभ अनुरागी बन कर अपने तन, मन और धन और अपनी सम्पत्ति आदि को औरों के भले या उपकार के लिए अर्पण करके अपने आत्मा का हित साधन कर सके।

याद रखो कि जहां तक कोई जन नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष पाने और परहित अनुरागी बनकर औरों के भले के लिए अपने तन, मन, धन और अपनी सम्पत्ति अर्पण करने के योग्य बनता है, वहीं तक वह अपना सच्चा आत्मिक हित करता है। फिर पर सेवा विषयक जितने प्रकार के उच्च भाव हैं, वह जिस अंश तक किसी में विकसित हों, उतने ही अंश उसके लिए क्या इस लोक और क्या परलोक में शुभ उत्पादक कामों के लिए फील्ड खुला रह सकता है। तब अति अवश्यकता है कि तुम नीच अनुरागी न बनों क्योंकि जितने अंश तुम धन या इज्ज़त या किसी औरत या किसी मर्द या अपनी किसी

सन्तान या अपने किसी शारीरिक सुख या आराम आदि के अनुरागी बनते हो उसी अंश तुम्हारे आत्मिक कल्याण का रास्ता दिनों दिन बन्द होता जाता है। इसलिए काश कि तुम ऐसी आत्मिक अवस्था में पहुँच सको कि तुम्हारे भीतर से यह आवाज़ निकले कि मेरी आत्मिक भलाई के रास्ते में मेरा कोई पारिवारिक या और सम्बन्धी या कोई और चीज़ रोक न हो और जो हो, उसकी गुलामी का मुझ में सच्चा और काफी बोध पैदा हो, और उससे मेरा उद्धार हो और उसके विपरीत मुझ में शुभ या हित उत्पादक विविध बोध और अनुराग विकसित हों कि जिनके द्वारा मेरी अपनी सब प्रकार की शक्तियां और वस्तुएं और मेरी सम्पति आदि (जो वास्तव में मेरी नहीं परन्तु नेचर की ही हैं) नेचर के विकासकारी नियम के पूरा करने में खर्च हों और ऐसा करने से औरों का और उनके साथ मेरा सच्चा भला हो।

(एक कर्मचारी सोलन से)

(जीवन तत्व 21 जून 1921 ई०)

72 साल के सतबीर की अद्भुत सेवा

हरियाणा के गांव पातुहेड़ा की 50 से ज्यादा लड़कियों ने 12 साल पहले छेड़खानी से परेशान होकर पड़ोसी गांव के स्कूल जाना बंद कर दिया था। छात्राओं की संख्या घटी तो शिक्षा विभाग ने इसकी वजह तलाशे बिना ही बनीपुर के इस स्कूल को बंद करने की तैयारी कर ली। पर सतबीर ढिल्लों की एक पहल ने ऐसा होने से बचा लिया। उनकी बदौलत न सिर्फ स्कूल बंद होने से बचा, बल्कि 400 से अधिक लड़कियों ने पढ़ाई भी जारी रखी।

दरअसल, पातुहेड़ा गावं में सीनियर सेकेंडरी स्कूल नहीं है। इसलिए यहां की लड़कियां 11-12वीं की पढ़ाई के लिए ढाई किलोमीटर दूर बनीपुर गांव जाती हैं। 12 साल पहले जब पातुहेड़ा की लड़कियों ने स्कूल जाना बंद किया। उसी समय सतबीर ढिल्लों रोडवेज विभाग के सब इंस्पेक्टर के पद से रिटायर होकर बनीपुर गांव लौटे थे। उन्हें जब सारी बात पता चली तो पंचायत और स्कूल प्रबंधक को लेकर पातुहेड़ा में लड़कियों के माता-पिता से मिले। भरोसा दिलाया कि वह खुद बेटियों को स्कूल लेकर जाएंगे और छोड़ेंगे। चार-पांच लोगों को छोड़कर बाकी लोगों ने लड़कियों को स्कूल भेजने से मना कर दिया। पर सतबीर ने नियम बना लिया। वे रोज सुबह पातुहेड़ा मोड़ पर स्कूल के समय से आधा घंटे पहले खड़े हो जाते और लड़कियों को स्कूल ले जाते। दो-चार दिन बाद रास्ते में मनचले लड़कों ने उन्हें घेर लिया। धमकाया। पर सतबीर बिना डरे अपने मिशन में लगे रहे। उन्हें ऐसा करते हुए 12 साल हो गए हैं। अब पातुहेड़ा के लोग इस 72 साल के बाबा के भरोसे करीब 45 लड़कियों को स्कूल भेजते हैं। जो स्कूल कभी बंद होने वाला था। अब उसमें विद्यार्थियों की संख्या 300 पार कर गई है। खुद ढिल्लों की चारों बेटियां, पोते-पोतियां इसी स्कूल से पढ़े हैं। पातहेड़ा की सरपंच सरला देवी कहती हैं, 'अगर बाबा नहीं होते हम बेटियों को स्कूल नहीं भेजते।' स्कूल प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार कहते है कि बाबा हमारे स्कूल के संरक्षक हैं।

मेल - मिलाप का आधार चारों जगतों की सेवा

(हम श्रेष्ट कैसे बने)

हमें आपसी सम्बन्धों में मधुरता और ताजगी लाने के लिए सभी परोपकार की भावनाओं के सहयोग की आवश्यकता है। मेल - मिलाप की भावना उनमें से एक है।

केवल मात्र मेल मिलाप की भावना ही आपसी सम्बन्धों में मधुरता के मूल्य का बोध करा सकती है। ऐसी भावना केवल लाभकारी सह - अस्तित्व को ही नहीं अपितु उसके आन्तरिक मूल्यों को भी पहचानती है। अन्मेल के दुष्परिणामों को जब हम देखते हैं तभी हम मेल मिलाप की उपयोगिता का मूल्य समझते हैं। हम सब जानते हैं कि अनमेल की स्थिति में शक्ति का बिखराव होता है।

जब दो भाइयों में जायदाद को लेकर अनमेल हो जाता है तब कचहरियों में लड़ने में दोनों के कितने धन, शक्ति का अपव्यय होता है। जब किसी महान संस्था के कार्यकारी सदस्य आपस में लड़ पड़ते हैं तो वे उस संस्था के लक्ष्य को कितनी हानि पहुँचाते हैं, जिसका उत्तरदायित्व उन्होंने संभाला हुआ होता है। एक विभाजित राष्ट्र शक्तिहीन राष्ट्र हो जाता है। वह अपनी शक्ति को आप ही खोता रहता है। जब तक कार्य कर्ता मिल - जुलकर काम करना न जानें तब तक कुछ भी अच्छा या महान कार्य परवान नहीं चढ़ सकता।

अस्तु, जब हम दुष्परिणाम के भय से अन्मेल से बचते हैं तो यह बुराई के प्रति उच्च घृणा है। किस प्रकार से लोग बड़े मजे से दो भाइयों के झगड़े की चर्चा करते हैं, दो बहनों की, पति - पत्नी की, उच्च श्रेणी के प्रशासकों की, एक प्रशासक और उसके अधीनस्थ व्यक्ति की, किसी संस्था के नेताओं की और इस प्रकार की चर्चा में बड़ा आनन्द लेते हैं। झगड़े मानों उनके आत्मा के भोजन के लिए स्वादिष्ट चटनी का काम करते हैं। वे उन झगड़ों को और बढ़ा - चढ़ा कर चर्चा करके उससे और अधिक आनन्द लेते हैं। मेल में विश्वास रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के झगड़ों के बारे में सुनकर वास्तविक दुख अनुभव किए बिना नहीं कर सकता है। यदि किसी व्यक्ति या समूहों और संस्थाओं के बीच झगड़ों की बात सुनकर हमें दुख नहीं होता तो यह निश्चित समझना चाहिए कि हममें मेल जोल की नैतिक भावना का अभाव है।

किसी बुराई से घृणा का अर्थ किसी अच्छाई से प्रेम नहीं हे। किसी अच्छाई से प्रेम करने का अर्थ है सकारात्मक प्रेम अर्थात इसका अर्थ है कि अच्छाई अच्छाई है, इसलिए उससे हमें प्रेम है और इसीलिए हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसे प्राप्त करना चाहते हैं। मेल मिलाप की भावना अपने में एक खुशी देने वाली चीज है, क्योंकि मेल मिलाप की सुन्दरता इसके सह अस्तित्वों के सम्बन्धों में है। एक कलाकार को रंगों के सामन्जस्य में आनन्द आता है। एक कलाकार को किसी कला कृति में, सूर्यास्त के समय की सुसंगत वर्ण योजना अर्थात् सुन्दर दृश्य को देखकर हमें आल्हाद का अनुभव होता है। एक वैज्ञानिक प्रकृति के नियमों की जानकारी प्राप्त करके आनन्दित होता है। जो कुछ भी ज्ञान और सौन्दर्य के क्षेत्र में सत्य है, वह नैतिकता के क्षेत्र में भी सत्य है। दो बच्चों को मेल जोल की भावना से खेलता हुआ देखकर हमें बहुत खुशी और सन्तोष मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि संसार प्रेम करने वालों से प्रेम करता है। प्रेम करने वाले वही व्यक्ति होते हैं, जिनमें ऊँचे स्तर की आत्मीयता की भावना होती

है।

यह मेल मिलाप की भावना ही है जिसने सभ्य व्यवहार का विकास किया है तथा जो आपसी रिश्तों में सभ्यता का बर्ताव सिखाती है। सभ्यता का अर्थ है - शिष्टता, भद्रता, न कि कठोरता या कर्कशता। हम उतने ही सभ्य हैं जितना कि हमारे अन्दर शिष्टता का, भद्रता का व्यवहार होता है। राजसी और उच्च वर्ग के लोग कैसी विनम्र भाषा का प्रयोग करते थे। हमें अपने दिन प्रतिदिन को व्यवहार में ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिससे दूसरों को कष्ट न हो। एक भाव या विचार अनेक प्रकार से प्रकट किया जा सकता है। हम अपनी बात अनाक्रामक ढंग से भी कह सकते हैं। बल्कि हम इससे भी आगे जा सकते हैं। हम अपनी भाषा में मिठास भर सकते हैं।

यथा तथ्य कहना हमारा पूर्ण नैतिक दायित्व नहीं है। कहते समय यह भी सोचना आवश्यक है कि दूसरे को उस भावना को व्यक्त करके सचेत करना कहाँ तक आवश्यक है। कई बातें ऐसी कह दी जाती हैं कि उनको न कहा गया होता तो अधिक अच्छा होता क्योंकि उनका परिणाम द्वेष जागृत करने के अलावा और कुछ नहीं होता। एक दूसरे की बात समझने में भी इससे कोई सहायता नहीं मिलती। यदि हमें दूसरे तक अपने भाव या विचार पहुँचाने ही हैं तो हमें उन्हें इस प्रकार व्यक्त करना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति उसे ठीक रूप में ग्रहण कर सके। जब हम इस प्रकार का ढंग निकालने में अपने को असमर्थ पाते हैं तो स्पष्ट है कि हममें मेल जोल की भावना का अभाव है। किन्तु यह भावना दूसरों के साथ आत्मीयता की चाह रखती है। इस भावना वाले जन के लिए 'दूसरा' भी उतना ही आवश्यक है जितना कि वह स्वयं। केवल सच्चा होना ही यथेष्ट नहीं है। सत्य को व्यक्त करने के लिए मधुर और प्रीतिकर भाव का होना भी आवश्यक है। हमारी प्राचीन संस्कृति इस बात पर बहुत जोर देती थी। कई धार्मिक कथन इस ओर हमारा ध्यान फेरते हैं। बुद्ध धर्म और जैन धर्म का इसके लिए विशेष आग्रह है। उनके अनुसार सत्य कथन को अहिंसक तो होना ही चाहिए परन्तु साथ ही सरस व मधुर भी होना चाहिए।

जैसे सच कहने के लिए भी कुछ शर्तें वा अपेक्षाएं आवश्यक हैं वैसे ही कथन की मिठास और मधुरता की भी अपनी अपेक्षाएं हैं। इसीलिए भगवान देवात्मा ने देव शास्त्र चतुर्थ भाग में आदेश दिया है - यह सबके लिए परमावश्यक है कि व्यक्ति दूसरे का साथ ऐसी मधुर भाषा का प्रयोग करे जो दूसरे के लिए ग्राह्य हो, विरोधी न हो सिवाए विशेष परिस्थितियों के जो कि अपवाद स्वरूप हैं।

एक बात और है हमारी हिंसा की भावना सामान्य परिस्थितियों को असामान्य मानने का भ्रम पैदा कर देती है। यदि हम अपने अन्तर में झांकें तो हमें यह अनुभव होगा कि कितनी ही बार हम ऐसे कठोर और अपशब्दों का प्रयोग कर जाते हैं जिनसे बचा जा सकता था। कटु और कठोर शब्दों का प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि हममें मेल जोल की भावना का अभाव है और इसके स्थान में हिंसा की भावना की वर्तमानता है। हिंसा की भावना मेल - जोल की भावना की विरोधी है। जहाँ मेल जोल की भावना दुख पीड़ा और नुकसान पहुँचाने से बचाती है, वहाँ हिंसा की भावना इन कार्यों में रस लेती है। हिंसा का भाव अहं और अन्य प्रकार के स्वार्थ के भावों के साथ मिलकर हमारे ऊपर शासन करता है। हम यदि कभी अपने को दूसरों का दिल दुखाने से रोकते हैं तो इसका कारण या तो उस दूसरे का डर या व्यवहारिक बुद्धि या दुखप्रद भाषा प्रयोग

न करने की अच्छी परम्परा ही होती है। परन्तु ऐसा भाव कम ही होता है कि दूसरे की भावना भी उस व्यक्ति के लिए उतनी ही पवित्र है और हमें अनावश्यक रूप से उसकी भावना को चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। जब हम दूसरों की भावनाओं का ख्याल करते हैं तो यह हमारे मेल जोल की भावना की वर्तमानता का प्रमाण है।

हमारी विनम्र भाषा का प्रयोग भी दूसरे के हृदय को कष्ट पहुँचा सकता है कि यदि हमारी इच्छा उसे चोट पहुँचाने की हो। इसे हम अपनी भाषा में मीठी छुरी कहते हैं। मीठी छुरी वह व्यक्ति है जो अपनी भाषा से दूसरे को ठगता है। उसकी विनम्र भाषा उसके हृदय में छिपे हुए असली बुरे भाव के ढक लेती है। वह अपनी हिंसा के भाव को मीठे शब्दों से ढक लेता है। जब हम सच्चे हृदय से दूसरे के लिए आदर प्रकट करने हेतु विनम्र शब्दों का प्रयोग करते हैं तभी हम अपनी सच्ची मेल जोल की भावना को प्रकट करते हैं। यही मेल जोल की भावना उच्च श्रेणी के लोगों में विनम्र भाषा उपजाने के लिए उत्तरदायी होती है। यह अत्यन्त खेद की बात है कि आज भद्र समाज के लोग नम्र भाषा की कला का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। इसका अर्थ है कि हमारी भावनाएं कठोर होती जा रही हैं।

फिर भी भाषा में माधुर्य और सरसता ही वह वस्तु नहीं है जो आत्मीयता की भावना से उत्पन्न होती है। शिष्टाचार का व्यवहार आपसी सम्बन्धों में मेल जोल लाने के लिए परमावश्यक है क्योंकि इसका आधार है दूसरों की भावना का आदर करना। शिष्टाचार की मांग यह है कि दूसरों के मिलने आने पर हम प्रसन्नता का प्रदर्शन करें और उसको समुचित आदर और मान दें। हम सब जानते हैं कि अतिथि को रूखेपन के स्वागत से कितना कष्ट होता है, यहाँ तक कि कई बार तो वह फिर कभी वहाँ न आने का निश्चय ले लेता है। कई इस बात को बड़े दुख के साथ स्मरण करते हैं कि जब वह किसी के पास ठहरे थे तो उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया। यही बात अतिथि के लिए भी सत्य है।

शिष्टाचार के स्तर से परे हमारी रुचियों और झुकावों का भी एक दख़ल होता है। मैं दूसरों के साथ उनके विचारों और अर्थों को समान आदर देते हुए उस पर विचार विमर्श करुँगा जिससे उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक मेरे साथ बातचीत का अवसर प्राप्त हो।

हम लार्ड इरविन के उस प्रसिद्ध समझौते के बारे में जानते हैं जबकि ब्रिटिश पार्लियामैन्ट और कांग्रेस पार्टी के बीच इस बात पर झगड़ा चला था कि राज्यपालों के राज्यों में क्या - क्या अधिकार होने चाहिए। भारत के नये संविधान में राज्यपालों को पूर्ण शक्ति प्रदान की गई थी, जिससे मन्त्रीमण्डल के निर्णय पर उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाते थे। कांग्रेस पार्टी चाहती थी कि राज्यपाल मुख्यमन्त्रियों के फैसलों के अनुसार चलें। वे केवल संवैधानिक मुखिया के रूप में कार्य करें। इससे एक प्रतिरोध उत्पन्न हो गया था। लार्ड इरविन ने यह देखा कि प्रत्येक पार्टी वास्तव में क्या चाहती है। ब्रिटिश संसद ने राज्यपालों को पूर्ण अधिकार दिया कि वह आपातकालीन स्थिति में संसद हित का अधिक ध्यान रखें। कांग्रेस दल चाहता था कि राष्ट्र के हित में मुख्य मन्त्री अपनी नीतियों को लागू करायें। लार्ड इरविन ने यह आश्वासन दिया कि राज्यपाल राष्ट्र के दैनिक काम काज में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेंगे। दोनों पक्ष सन्तुष्ट हो गए क्योंकि दोनों जो भी चाहते थे उन्हें मिल गया। गतिरोध की अवस्था में दोनों को कोई समाधान नहीं मिल रहा था क्योंकि दोनों ने ही सहमति के क्षेत्रों की तलाश ही नहीं

की थी।

जब माता पिता में सन्तान की भलाई को लेकर मतभेद हो जाता है तो एक दूसरे का यह सोचना कि दूसरा सन्तान का दुश्मन है, ग़ल्त है। यदि दोनों ही उन बातों पर समझौता कर लें तो दोनों में असहयोग की भावना को कम किया जा सकता है। उन विभिन्नताओं के विश्लेषण से यह भी पता चलेगा कि मतभेद का क्षेत्र अत्यन्त छोटा है। यही बात राजनैतिक दलों तथा समूहों के बारे में सत्य है। मतभेदों का विश्लेषण करने पर पता लगता है कि सभी मतों की आधारभूत भूमि एक ही है।

परन्तु मतभेद को उजागर करने की प्रवृति गलत भी हो सकती है। इससे मत भेद जो वास्तव में अधिक नहीं हैं, वह बढ़ सकते हैं। परन्तु इनदोनों में से मेल जोल की भावना का विकास बेहतर है क्योंकि साधारण जन का मत भेद पर जोर अपनी नीच घृणा या हिंसा के भाव को सन्तुष्ट करने के लिए होता है और उसे नाम देता है मिथ्या या अहित के प्रति उच्च घृणा का। एक सन्त कहा करते थे कि जब अपने धर्म की श्रेष्ठता और महानता पर बल देने की बजाय अपने खोखले अहंकार को ही तृप्त करता होता है क्योंकि हमारी यह आदत बन गई है कि हम मत-भेदों पर बहुत अधिक जोर इसलिए देते हैं कि इससे हमारी नीच घृणा की तुष्टि होती है। हमें इस प्रकार के प्रभाव को कम करने के लिए आत्मीयता की भावना का विकास करना चाहिए ताकि हम सच्चाई के निकट पहुँच सकें।

मेल जोल की भावना हमें जीवन में इससे भी ऊँची छलांग लगाने की ओर प्रेरित करती है। रिश्तों की मधुरता कायम रखने के लिए यह एक-एक जन को अपना उचित अधिकार त्याग देने में भी सहायता करती है। अपने नित्य प्रति के जीवन में हम छोटी-छोटी बातों पर भी झगड़ा कर लेते हैं, जैसे बस या रेलगाड़ी की यात्रा में हम एक सीट के लिए झगड़ना प्रारम्भ कर देते हैं, किसी कमरे में आलॉटमैन्ट के बारे में हम झगड़ने लगते हैं। हमारे अन्दर हिंसा की भावना बड़ी है परन्तु कुछ लोग अपवाद होते हैं। एक जन का विवाह एक ऐसी लड़की के साथ हो गया जो कि द्विलिंगी (स्त्री-पुरूष दोनों प्रकार के लक्षणों से युक्त) थी। वह वैधानिक दृष्टि से ऐसे विवाह को समाप्त करने का अधिकार रखता था। अपने साथ किए गये एक धोखे के कारण वह निज की सन्तान प्राप्त करने से वंचित रह गया था। वह यह भी जानता था कि उसके ऐसा करने से उस लड़की का क्या परिणाम होगा। इससे दोनों परिवारों के बीच सम्बन्ध भी खराब हो जाएंगे। उसने अपने वैवाहिक सम्बन्ध को ज्यों का त्यों बनाए रखने के लिए महान त्याग किया। उसने निश्चय किया कि वह अस्पताल से एक बच्चा गोद ले लेगा। ऐसा करने से यह विवाहित युगल प्रसन्न है। और दोनों परिवार भी। इस मामले में नवयुवक ने अपनी इस परिस्थिति का चुनाव नहीं किया था। वह तो इस परिस्थिति में फंस गया था। परन्तु उसने मेल जोल का भाव रखकर इस परिस्थिति का सर्वोच्च प्रकार से सामना किया।

आजकल का समाज अपंग लोगों के साथ मेल मिलाप रखना चाहता है। नेत्रहीनों, बहरों, गूगों, लंगड़ों और अंगहीन व्यक्तियों को हर प्रकार शिक्षा, प्रशिक्षण और नौकरी आदि दी जा रही है। यह उन्हें समाज के एक सामान्य अंग के रूप में स्वीकार करने की ओर एक बड़ा कदम है। आज तो समाज कैदियों के साथ भी सह अस्तित्व बढ़ा रहा है। जेल से बाहर आने पर वे कोई काम कर सकें इसके लिए उन्हें

उचित प्रशिक्षण दिया जा रहा है तथा उनके लिए रोजगार ढूंढने में उनकी सहायता भी की जाती है।

रंग भेद की नीति को सह-अस्तित्व की भावना घृणा के भाव से देखती है। एल्बर्ट स्विटजर जैसे लोगों ने अफ्रीका के काले लोगों के साथ भी मेल जोल का जीवन जिया है। केवल एल्बर्ट स्वीटजर वह प्रतिभावान मानव हैं जिसने अफ्रीका के काले लोगों के साथ जीवन बिताना पसन्द किया और उनकी सेवा की जबकि वहाँ आदि काल की जंगली परिस्थितियाँ विद्यमान थी। गाँधी जी ने अपने आपको हरिजन लोगों के साथ इतना आत्मसात कर लिया था कि वह हरिजन बस्ती में उनके बीच में जाकर रहते थे। उन्होंने एक हरिजन कन्या को अपनी पुत्री की तरह पाला। इन नये झुकावों से पता चलता है कि किस प्रकार मानव समाज में शारीरिक, मानसिक, जातिवर्ग और गैर तरीकों के भेद भावों को भूल कर जागृति हो रही है।

मनुष्य की सह अस्तित्व की भावना वनस्पति जगत और पशु जगत तक विस्तृत हो चुकी है। अब इन क्षेत्रों में भी बड़ी जागृति पैदा हो चुकी है। वन्य जीवन और वनों तथा प्रकृति और प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण के लिए अर्न्तराष्ट्रीय संगठन का विकास हो गया है। इसका लक्ष्य है- मानव द्वारा वनस्पति जगत और पशु जगत के नाश पर रोक तथा इन दोनों जगतों के प्रति अपने एवं उनके हितार्थ दायित्वों की भावना का विकास एवं उनकी वृद्धि के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान की जाएं। इसमें लाभ की दृष्टि और उसका आन्तरिक सच्चा मूल्य दोनों ही निहित हैं। पर्यावरण का सन्तुलन मानव जीवन को क्षय होने से बचाता है। विविध प्रकार के पौधों और पशुओं का होना पृथ्वी को और अधिक समृद्धि प्रदान करता है और इस वृद्धि की सराहना से मानव की अनुभूतियों में भी वृद्धि होती है। जीवित रहने का अर्थ है पृथ्वी के चारों जगतों के साथ एकता और परम एकता की भावना के साथ जीना।

धन्यवाद ज़रूर दें....

सुनने में धन्यवाद बहुत छोटा-सा शब्द लगता है, परन्तु यह बहुत ही सकारात्मक एवं प्रभावी असर डालता है। हर काम के बदले पैसे देकर ऋण नहीं चुकाया जा सकता, धन्यवाद देकर भी चुका सकते हैं। कई बार हम किसी से छोटी-बड़ी मदद लेने के बाद उसका धन्यवाद करना भूल जाते हैं या जरूरी नहीं समझते। हमें किसी से सहयोग, चाहे छोटा-सा मिला हो, परन्तु उसे धन्यवाद के द्वारा कृतज्ञता ज़रूर जाहिर करनी चाहिए। इससे सहयोग करने वाले के मन में हमारे प्रति सकारात्मक एवं सम्मान के भाव आते हैं। आत्मीयता के ये भाव बहुत मायने रखते हैं। फिर चाहे वह रिक्शावाला हो, पोस्टमैन या कुटिया वाला हो, कामवाली बाई या सब्जीवाला हो, बिजली या फ़ोन का बिल आदि भरते वक़्त, छुट्टा लेते समय टिकट लेते समय, बैंक या किसी ऑफिस में काम करवाते सयम या रास्ता व माकान का पता पूछते समय, अगले को धन्यवाद ज़रूर देना चाहिए। धन्यवाद देना शिष्टाचार एवं सहयोगी या उपकारी के प्रति कृतज्ञता के भावों को दर्शाता है। अत: अब मैंने इसे हमेशा के लिए अपने जीवन का मंत्र बना लिया है। मैं अपने हर सहयोगी को धन्यवाद जरूर देती हूं और देती रहूंगी।

(मधुरिमा)

सवाल संतों की शुचिता का

वह कौन से आधार है, जिसके कारण संतों और महात्माओं की समाज में इस हद तक स्वीकार्यता है कि वे सरकार के लिए मुशिकल और लोकतंत्र के लिए चुनौती बन जाते हैं।

तांत्रिकों और छोटे-मोटे बाबाओं-फकीरों की गतिविधियों को लेकर समाज बहुत पहले से संदेहास्पद निगाह रखता रहा है, लेकिन यह पहली बार है कि करोड़ों का बाज़ार खड़ा कर चुके देव छवि वाले पाखंडी संतों के प्रति एक नकार का भाव आ रहा है। खुद को देवता की तरह पेश करने वले स्वयंभू संतों को लेकर एक दो-वर्षों में जिस तरह के खुलासे हुए हैं, उसने संतई की पूरी परंपरा पर गहरे सवाल खड़े किए हैं। कोई दुष्कर्मी के रूप में चिहिनत हो रहा है तो कोई सामूहिक सेक्स को मुक्ति के रास्ते के तौर पर पेश कर रहा है। किसी के हाथ खून से लथपथ हैं और कोई गरीबों के जमीनों पर कब्जा करने की ही 'संतई' में गले भर डूबा पड़ा है।

गौरतलब है कि स्वघोषित संत पुराने समय की जड़ मान्यताओं को नए उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करते हैं और लोगों का मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं शारीरिक शोषण करते हैं। वह लोगों की निराशा और बेहतरी की उम्मीद को अपने आभामंडल और भाषाई फरेब के जाल में फांसकर एक तरह से अपनी आस्था का बंधुआ भक्त बना लेते हैं, जिसके बाद भक्त न सिर्फ उनके किए कार्यों में उचित-अनुचित का फर्क भूल जाते हैं, बल्कि उनपर लगने वाले आपराधिक आरोपों का भी जाहिली की हद तक विरोध करते हैं। हालांकि, यह सिलसिला नया नहीं है। जहां देश में वैज्ञानिक चिंतन का विकास होना चाहिए था, वहां देश का बहुसंख्यक पुरातन मान्यताओं के रसास्वादन में लीन हो गया और भारत में संस्कृति और धर्म में फर्क न कर पाने से एक ऐसी भ्रांति का जन्म हुआ, जिसने हजारों सालों की सांस्कृतिक विरासत को धार्मिक अंधविश्वास बनाकर उस पर गर्व करने को प्रेरित किया।

इस भ्रामक मनोवैज्ञानिक आधार पर कठमुल्लाओं व पोंगापंडितों को पनपने का मौका मिला, जिन्होंने समाज की संपूर्ण विचार प्रक्रिया को पंगु बना दिया। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि वह कौन-सा भौतिक आधार है, जिसके कारण संतों और महात्माओं को समाज में इस हद तक मान्यता प्राप्त होती है। दरअसल, भारत विरोधाभासों का देश है। यहां एक तरफ विज्ञान और आधुनिक लोकतंत्र की मान्यता है और दूसरी ओर पाखंडपूर्ण कर्मकांडों को बहुत आसानी से फैलने का अवसर मिला हुआ है। विश्लेषक मानते हैं कि किसी भी अस्थिर समाज में वैज्ञानिक चिंतन का स्थान आस्था ले लेती है। यहां इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी है कि लोकतंत्र की तमाम घोषणाओं और दावों के बावजूद भारत में लोकतंत्र अभी भी पूर्ण रूप से संस्थागत नहीं हो पाया है और यही वह कमजोरी है जो बाबाओं, संतों और महात्माओं को आसानी से मान्यता देती है। नहीं तो ऐसा क्यों है कि विज्ञान की शक्ति के बड़े-बड़े साक्ष्यों से घिरे रहने के बावजूद लोग आसानी से 'लाल चटनी खाकर' अपने जीवन में परिवर्तन हो जाने की बात मान लेते हैं। भारत में बाबाओं का बोलबाला और उनकी मान्यता अपने आप में कोई रोग नहीं है। यह किसी गहरी बीमारी का लक्षण है, जिसका समय रहते इलाज करने की जरूरत है।

(सरिता से साभार)

छोटी छोटी क्रियांए किसी को मुस्कान दे सकती है

आलडस हक्सले अपनी मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए थे, जब उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी की फिलास्फी को इन शब्दों में संक्षेप से बताया, "Let us be kinder to one another (हमें एक दूसरे के लिए हमदर्द बनें)"

हम यह विश्वास करते हैं कि सचमुच महान बनने के लिए कुछ बड़े बड़े काम करने चाहिए, जिससे हम अख़बारों में, टी.वी. पर छा जाएँ, परन्तु सचाई कुछ और है। अर्थपूर्ण ज़िन्दगी प्रतिदिन के छोटे छोटे कार्यों से बनती है, जो कार्य दूसरों की जिन्दगी में कुछ खुशी भर सकें। प्रतिदिन के आपके कार्यक्रम में ऐसे लम्हें आते हैं, जहां आप हमदर्दी से भरे छोटे से व्यवहार से अपनी मानवता को दर्शा सकते हैं, दूसरों के मुख पर मुस्कान ला सकते हैं और अपने इर्दगिर्द के वातावरण को खुशनुमा बना सकते हैं। यदि आप दिन भर में एक व्यक्ति के मुख पर ही मुस्कान लाते हैं, तो वह दिन सफल समझीऐ। रौबन शर्मा एक बहुत प्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा हैं," हमदर्दी से हम सधारणत! वह किराया अदा करते हैं, उस स्थान का जो हमें इस ग्रह पर मिला हुआ है।"

हम कार में आगे टोल दे रहे हैं, अपने पीछे वाली कार का भी टोल देकर एक अजनबी को खुशी दे सकते हैं, गाड़ी वा बस में अपनी सीट किसी ज़रूरत मन्द को देते हैं, तो आप उसकी मुस्कान देख सकते हैं, चलते चलते किसी अजनबी को भी हैलो कर दो तो वह आपको देखकर अवश्य मुस्कराएगा। जाते हुए किसी बजुरग को राईड देकर आप सकून अनुभव कर सकते हैं। अपने अधीन कर्मचारियों को पहले नमस्कार करके उन्हें इन्सान होने का एहसास दे सकते हैं। कोई रिक्शा वाला आपके घर के पास धूप में खड़ा है, उसे अपने आप पानी पिलाकर आप उसकी खुशी ले सकते हैं।

मेरी बेटी को स्कूल में छोड़ने रिक्शावाला जाता था। मैं उसे रिक्शा मास्टर कहती थी, तो एक दिन उसने बेटी से कहा कि आपकी मामा मुझे रिक्शा मास्टर कहती हैं, ऐसा सन्मान हमें कोई नहीं देता। कितनी छोटी बात है, परन्तु रिक्शा वाले को भी माननीय इन्सान होने का एहसास दिलाती है। किसी अपने से छोटे वा गरीब आदमी को कोई अच्छा कपड़ा डाले देखकर उसकी प्रशंसा कर दो तो वह खुशी से फूला नहीं समाएगा, जिससे आपको भी खुशी मिलेगी। महान काम करने सब के बस की बात नहीं, परन्तु यह छोटे छोटे कार्य हम सब कर सकते हैं। कुछ देर पहले शाहरुख खान की एक घटना पढ़ी, जो बहुत ही सुन्दर हृदय का प्रमाण है। वह घटना इस प्रकार है: -

करीना का परिवार पिछले कुछ वर्षों से मुबई में रह रहा था। एक दिन करीना की दादी मां और उसका दस साल का भाई प्रवीन शाहरुख खान से मिलने एक स्टुडिया में गए, वहां वह किसी फिल्म की शूटिंग कर रहे थे। शाहरुख खान शूटिंग के दौरान किसी से बात नही करते थे। लेकिन शूटिंग खत्म होने के बाद वह अपने प्रशंसकों से कुछ देर बात करके ही वापस घर लौटते थे। उस दिन जब शूटिंग खत्म होने लगी, तो प्रवीन किसी तरह से अपनी जगह बनाते बनाते शाहरुख खान के पास पहुंच गया। वह सबको ऑटोग्राफ दे रहे थे। प्रवीन को देखकर वह बोले, क्यों

छोटू, तुम्हे ऑटोग्राफ नहीं चाहिए क्या? प्रवीन अपनी बहन की तस्वीर शाहरुख को दिखाते हुए बोला, नहीं। मेरी बहन आपकी बहुत बड़ी फैन है। शायद उससे बड़ा फैन आपका कोई नहीं होगा। लेकिन उसे कैंसर है और वह यहीं एक अस्पताल में भर्ती है। उसके पास कुछ ही दिन बचे हैं। प्लीज, क्या एक बार आप अपनी सबसे बड़ी फैन से मिलने आएंगे? वह आपको देखकर बहुत खुश हो जाएगी। शाहरुख खान एकदम हैरान होकर उसे देखने लगे। उन्होंने प्रवीन के हाथों से करीना की तस्वीर लेकर देखी, जिस पर नीचे अस्पताल का पता और अन्य जानकारियां लिखी हुई थीं। कुछ दिन बीत गए। शाहरुख को बार-बार छोटी सी करीना का चेहरा नजर आने लगा। एक दिन उन्होंने अपने ड्राइवर को प्रवीन के बताए पते पर जाने को बोला। जब वह वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एक प्यारी सी लड़की अस्पताल के बिस्तर पर लेटी हुई है। उसके सारे बाल कीमोथेरेपी से झड़ गए हैं। उसके पास उसका भाई प्रवीन और परिवार के कई अन्य सदस्य बैठे हुए थे। शाहरुख खान को देखकर करीना बिस्तर से उछल पड़ी। शाहरुख खान और करीना ने करीब दो घंटे साथ बिताए। जब जाने को वक्त आया, तो शाहरुख ने करीना से कहा मैं चाहता हूं कि तुम अपने दिमाम में सिर्फ एक बात सोचो, कि तुम एकदम ठीक हो जाओगी। लगभग एक साल बाद शाहरुख के जन्मदिन पर करीना शाहरुख के घर पर उनसे मिलने पहुंची। करीना ने उनसे पूछा, क्या आपने मुझे पहचाना? शाहरुख दो मिनट के लिए सोच में पड़ गए। करीना बोली, आपने कहा था न, सिर्फ एक बात सोचो, कि तुम एकदम ठीक हो जाओगी। मैं बस आपको धन्यवाद कहने आई हूं। शाहरुख तुरंत करीना को पहचान गए। उसके बाल अब काफी बड़े हो गए थे चेहरा भर गया था और वह बहुत खूबसूरत दिख रही थी। शाहरुख के लिए वह एक यादगार तोहफा था।

अगर खुद पर विश्वास हो, तो बड़ी से बड़ी चुनौती भी पार की जा सकती है।

सुरजीत बराड़

बाकी पृष्ठ 19 का

विशेष रूप से उनके दर्शनों के लिए और उन्हें प्रणाम करने के लिए उनके सुन्दर महलनुमा घर Green Park में जाता रहा हूं।

बीबी भुपिन्द्र जी भी विशेष योग्यता वा बहुत अच्छे असूल रखती हैं, वह नेक माता पिता की देवी बेटी है। उसकी सन्धू साहिब और बचिन्त जी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करती थी। दीपक जी, भुपिन्द्र जी और बच्चों ने जो उनकी बहुत सेवा की है, मैं उनको सिर झुकाकर सन्मान देता हूं।

मुझे दुख है कि मैं इस समय अमरीका में बैठा हूं। इस अवसर पर हाज़िर नहीं हो सका, इसके लिए आपसे क्षमा मांगता हूं।

मेरी और मेरी धर्म पत्नि जी की यह हृदय-गत कामना कि आपकी परलोक में उच्च धर्म सम्बन्धी उनकी अधिक से अधिक रक्षा करें। जितना सम्भव है आपका लक्ष्य उच्च हो। सदा देवात्मा गुरू के चरणों की ओर आपका ध्यान रहे।

आपके आत्मा को शान्ति मिले। आपका परिवार सदा देव प्रभावों का तलबगार रहे और सुरक्षित मार्ग पर चल सके। यही आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

आपका धर्म सम्बन्धी
बलदेव सिंह

मेरे बहुत सन्मान के योग्य श्रीमति बीबी बचिन्त कौर जी!

आपकी सेवा में, सत्कार सहित सत्य देव की जय कहता हूं और प्रणाम करता हूं।

आख़िर यह दिन आ ही गया, जो सब की ज़िन्दगी में अवश्य आता है, आपने अपनी जीवन यात्रा पूरी करके अपने प्यारे दो पुत्रों, बीबी भुपिन्द्र, नीटू जी, उनकी पत्नी, अपने पोते, पुत्रियों वा सब संसारिक सम्बन्धियों से बिछुड़ कर इस संसार को छोड़ गई। प्यारे बच्चों की छाया उनके सिर से उठ गई, उनके दुख और शोक में मैं और मेरी धर्म पत्नि आपकी कुलीग और प्यारी सखी सुरजीत जी शरीक होते हैं।

आप एक बहुत ही नेक भारतीय महिला थी। आप की पैदायश प्रतिपालन और शिक्षा देव समाज के सुनहरी युग के प्रभावों में हुई। जिसके कारण आपके हृदय पर भगवान देवात्मा की शिक्षा की गहरी वा अमिट छाप थी। आप भगवान देवात्मा जी के कारज में सच्चे त्यागी वा काम करने वालों के लिए सच्ची वा गहरी श्रद्धा रखती थी। पंडित नेतराम जी, श्रीमान गोपीचन्द जी, विशेषकर श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी और श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी के लिए गहरी श्रद्धा रखती थी। आपका मायका परिवार और आपका अपना परिवार समाज के इतिहास का अंग रहा है। आपके पिता नम्बरदार थे, पंडित नेतराम जी के मित्र थे। आपके इकलौते भाई ज्ञान सिंह जी भी लम्बे समय तक सेवक रहे और समाज के आफिस में काम करते रहे। आपके माननीय पति सरदार प्रीतम सिंह जी सन्धू समाज की उच्च श्रेणी के सेवक थे वह देव समाज Boys Sr. Sec. स्कूल के प्रिंसीपल रहे। आप दोनों काफी समय तक देव समाज प्रतिनिधि सभा के मैंबर पद पर सशोभित रहे। बहुत ही शराफ़त वा नेक दिली से भरकर आप दोनों ने स्कूलों की सेवा की।

आप ममता की बड़ी सुन्दर उदाहरण हो। आप बच्चों के जन्म के समय 8 - 9 महीने सरकारी हस्पताल में बैड रैस्ट पर रहकर बड़ी कठिनाई में से गुज़र कर जन्म दिया।

आप अपने बहन भाईयों और उनके बच्चों को बहुत प्यार करते थे। सबको अपने पास रखकर पढ़ाया। उनके दुख सुख को बहुत गहराई से अनुभव करती थी।

उनके सपुत्र दीपक जी ने मोगा स्कूल की बहुत लगन, श्रद्धा और त्याग के साथ सेवा करके Building को बहुत सुन्दर रूप दिया। उन्होंने मोगे में Muncipality के प्रबन्ध का मैंबर बनकर आपके नाम को रोशन किया।

आप सन्मान, श्रद्धा, पवित्रता, नम्रता और सादगी के उच्च गुणों भरा जीवन रखती थी। वह अपने से छोटों से भी समझने और सीखने के लिए तैय्यार रहती थी।

मुझ तुच्छ का भी बहुत सन्मान करती थी। मेरे लिए देव समाज का कर्मचारी होने के नाते बहुत श्रद्धा का प्रकाश करती और सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी। जब 1988 में समाज विभाजित हुई तो कई वर्षों तक उन्होंने सचाई का पक्ष लिया। वह सदा समाज की पत्रिकाओं को धर्म जीवन और हित स्तोत्र को बार बार पढ़ती, और लाभ उठाती और लम्बे लम्बे फोन करके लेखों के लिए धन्यवाद देती। उन्होंने दीपक जी को मेरे सामने आदेश दिया कि मेरे श्राद्ध की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी से करवानी है। अफसोस कि मैं विदेश में होने के कारण उनकी यह इच्छा पूरी नहीं कर सका। मैं भी जब मोगे की तरफ जाता, तो

शेष पृष्ठ 18 पर

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

आपको यह जान कर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव इस वर्ष भी हर वर्ष की तरह पूरे चावभाव से 22 सितम्बर 2017 से 24 सितम्बर 2017 तक मनाया जा रहा है। इस वर्ष भी यह मुबारक उत्सव देव आश्रम निकट डेराबस्सी में ही रखा गया है। इस उत्सव से पहले कुछ दिन का विशेष सत्संग रखा गया है। आपकी सेवा में पुरज़ोर प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं ऐसे शुभ अवसर का लाभ उठाएं, बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी अधिक से अधिक संख्या में साथ लाकर सच्चे पुण्य के भागी बनें। सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा 22 सितम्बर शाम 4.30 बजे आरम्भ होगी।

22 सितम्बर शुक्रवार

प्रवेश सभा : 4:30 बजे शाम

विषय : सत्य धर्म बोध उत्सव की विशेषता।
यात्रियों का स्वागत।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

23 सितम्बर शनिवार

पहली सभा : 9.00 बजे सुबह

विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।

दूसरी सभा : 11:00 बजे सुबह

विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।

तीसरी सभा : 4.30 बजे शाम

विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

24 सितम्बर इतवार

पहली सभा : 8.30 बजे सुबह

विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।

दूसरी सभा : 10.00 बजे सुबह

विषय : सभाओं से उठाए हुए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

फोन : 0172 – 2716914

सन्मान भाव से प्रार्थी
बलदेव सिंह मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts